भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक

वर्ष-4 अंक-1 जुलाई, 2002

कविता

13

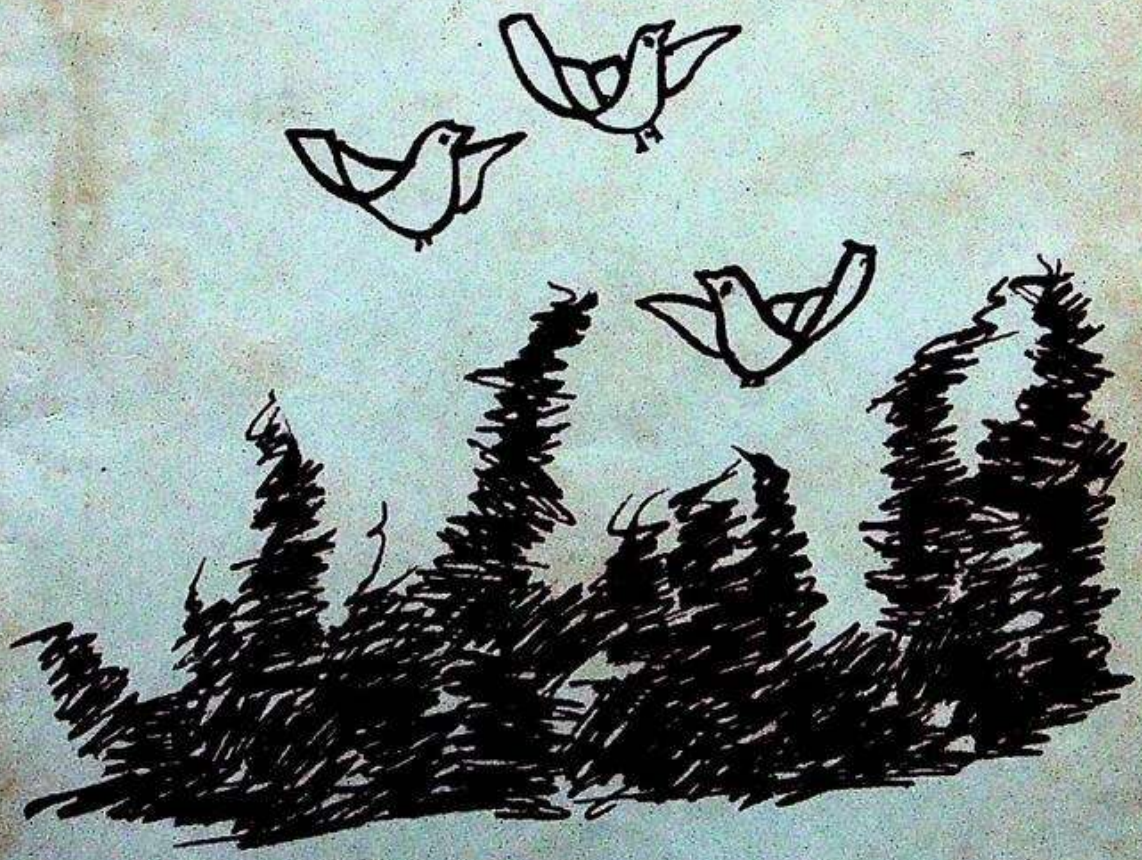

सम्पादक : जगन्नाथ

कविता

(भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक)

वर्ष–4 अंक–1 जुलाई, 2002

सम्पादक : जगन्नाथ
सह सम्पादक : भगवती प्रसाद द्विवेदी
प्रबन्ध : संजय कुमार
चित्रसज्जा : संगीता सिन्हा
सम्पादकीय सम्पर्क : श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना–1
प्रकाशक : भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान
श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना–1
सहयोग राशि : एह अंक के : 6/–
वार्षिक : 20/–
डाक से : 25/–
आजीवन : 251/–
(सहयोग-राशि सम्पादक का नाँव से सम्पादकीय सम्पर्क पर देय)

सम्पादन-संचालन : अवैतनिक-अव्यावसायिक

रचना खातिर एकमात्र रचनाकार जिम्मेवार । भाव, विचार आ कवनो स्तर पर ओह से 'कविता' परिवार के सहमति कतई जरूरी नइखे।

'कविता' – प्रतिनिधि

डुमराँव : मुफ़लिस (चौधरी टोला)
बक्सर : रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' (शंकर भवन, सिविल लाइन्स)
आरा : जितेन्द्र कुमार (मदनजी का हाता, पकड़ी चौक)
मोतिहारी : कुमार अरुण (कार्यालय, जिला सहकारिता पदाधिकारी)
सीवान : डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित' (जेड. ए. इस्लामिया कॉलेज)

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादक के पन्ना

पत्रिका निकाले में आर्थिक कठिनाई जे बा, से बड़ले बा, ओकरो से बड़ कठिनाई रचना-सामग्री के जोगाड़ कइल बा। ई कठिनाई कमोबेश हर भोजपुरी पत्रिका के सम्पादक झेल रहल बा। कई सम्पादक लोग त एह सम्बन्ध में गोहारो लगा चुकल बा आ कुछ जना त अधिकांशतः छपल रचना के ही छाप के अपना पत्रिका के जीवित रखले बाड़न।

एह तरह के विषम स्थिति काहें आइल, एकरा पीछे कई गो तर्क दीहल जा सकेला। पहिल त ई कि पर्याप्त संख्या में रचनाकार लोग रचना नइखे भेजत, बाकिर एह तरह के तर्क त आधारहीने नू कहाई, काहेंकि रचनाकार त प्रकाशित होखहीं खातिर रचना के सृजन करेला। कुछ समय पहिले तक त रचनाकार लोग से इहे सुने के मिले कि रचना भेजल कहाँ जाउ, पत्रिके कहाँ बाड़ीसन? मानदेय खातिर भी भोजपुरी के रचनाकार रचना भेजल ना रोकी, काहेंकि ओकरा पूरा-पूरा पता बा कि भोजपुरी के पत्रिका कइसे निकल ताड़ी सन। हँ, अतना जरूर बा कि रचनाकार अपना पसन्द का पत्रिका में ही छपल पसन्द करेला आ ओही में रचना भेजेला। दोसर तर्क लेखन-परिमाण में ह्रास आ स्तरीयता का अभाव के दीहल जा सकेला। लेखन-परिमाण में कुछ त ह्रास जरूर भइल बा। पुरनकी पीढ़ी के सक्रियता में कमी आइल बा, एकरा के नकारल ना जा सके आ नयकी पीढ़ी से रचनाकार ओह संख्या में ना उभरलन, जवन अपेक्षित रहे। बाकिर, परिमाण में ह्रास ओह हद तक नइखे पहुँचल, जे एह तरह के स्थिति पैदा करे। हँ, गुणवत्ता के अभाव एह परिमाण के सीमित-संकुचित जरूर कर रहल बा।

नई पीढ़ी के पास बेजोड़ प्रतिभा बा। जरूरत बा एह पीढ़ी के उसकावे के, प्रेरित करे के। जरूरत बा मातृभाषा के प्रति एह पीढ़ी में उत्सर्ग आ समर्पण के भावना जगावे के। सम्पादको लोग का एह काम में लागे के परी; सम्पादक का नाते त ई ओह लोग के कर्त्तव्य भी बनता। अइसे, रचना के संकट भोगल त सम्पादक के हमेशा से नियति रहल बा, पहिलहूँ रहे, आजो बा आ आगहूँ रही, काहेंकि ओकरा त अपना पत्रिका के अनुरूप सामग्री-चयन करे के होला।

'कविता' के नया स्वरूप

'कविता' का नियमित प्रकाशन के तीन साल पूरा हो गइल। एह अंक से 'कविता' चउथा साल में प्रवेश कर रहल बा। अपना सहयोगी रचनाकार आ पाठक लोग के प्रति कविता परिवार हृदय से आभारी बा। 'कविता' ओही लोग का सहयोग के त प्रतिफल बा।

एह अंक से कविता के पृष्ठ संख्या में आठ पेज के बढ़ोत्तरी कइल जा रहल बा। अब पत्रिका सोलह पेज के बजाय चौबीस पेज के होई। पृष्ठ-वृद्धि का संगे-संगे 'कविता' के स्वरूप में भी कुछ परिवर्तन कइल जा रहल बा। पूर्ववर्ती स्वरूप के अक्षुण्ण राखत अब कविता में काव्य-पुस्तक समीक्षा, काव्य विषयक लेख आ काव्यविषयक विविध सामग्री भी समायोजित कइल जाई। विश्वास बा, एह तरह के स्वरूप-निर्धारण अपने के रुची। एह सम्बन्ध में अपने सभ से सर-सुझाव के अपेक्षा बा।

www.bhojpurisahityangan.com

पाण्डेय सुरेन्द्र के दूगो गजल/कविता

गजल

गइल दउड़त जे मिरिगा मन भरम अजबे फँसा आइल
ई लालच आज अपना के बिराना में भसा आइल

जबहिएँ आब मोती के त चहलीं छान लेबे के
त अइसन टाँग धसकल जे किनारा ले धसा आइल

पुरोहित रउआ बानी जी, भइल जजमान हम बानी
ई दछिना बीच में आके त रिश्ते के हँसा आइल

जे आदत पड़ गइल बाटे रहे के भूख से मातल
ई अइसन पेट भरला से चढ़त कइसे नशा आइल

करत आइल बा कहिया से तिजारत बस जहरिया के
नगिनिया लेके का आइल, ऊ अपने के डँसा आइल

अजब दुविधा में बानी हम, भरम में मन पड़ल बाटे
खटिअवा जे रहे झोलरी, ऊ कइसे के कसा आइल

बकरिया धइके ले आइल भइल तब बन्द दरवाजा
तरस अपने पर आइल जे कि कइसन ई दसा आइल

कविता

भउजी माने झगड़ा
देवरा माने रगड़ा

भउजी माने तितलउकी
ननदी माने बउकी

सभा आउर सोसायटी
घरवे में पंचाइती

बुढ़िया खाँसे खाँव-खाँव
नाँवे नाँव कि अकरवले नाँव

✪

www.bhojpurisahityangan.com

पी॰ चन्द्रविनोद के दूगो गीत

[एक]

भहराइल असरा हियाव के
जब से टूटल नाव बा !
एह किनार से ओह किनार ले
लउकत कहाँ पड़ाव बा !

पार करे खातिर अथाह के
लागल जोर बतास के ।
लहर-लहर पर पसर गइल बा
लमहर हाथ हतास के ।
कइसे कहीं, कहीं का साथी
मुँह पर हँसी छलाव बा !

थाकल हाँफत साथ चल रहल
चंचल मछरी साँस के ।
अंग-अंग बा भइल अनोही
बनल मीत परिहास के ।
जो तनिका भर मिलल दिलासा
ऊपर के पहिराव बा !

मन में लाग रहल बा अइसन
दियरी झाँके पार के ।
भरमे में जे कटल हर पहर
जीतल जिनिगी हार के ।
लागेला बदलल बा सगरो
कुछ ना छूँछा छाव बा !

[दू]

रात का रतउँधी अँजोर का अन्हार ।
मीठ लागे मरिचा तिताह लागे खाँड़ ।।

गड़ही पहाड़ बा
पहाड़ भइल झील ।
फूल का करेजा
ठोकाता अब कील ।
लँगटा के लंगई करेला अउँजार ।
रात का रतउँधी अँजोर का अन्हार ।।

टापा टोप टाप गइल
छिपुली परात ।
लिलिहें चनरमा
अकसवे छछात ।
माई मारी टपरा बिलार के लहार ।
रात का रतउँधी अँजोर का अन्हार ।।

इहवाँ से उहवाँ ले
सब बा बेहाल ।
बाते-बात सगरो
सवाल पर बवाल ।
बँगला तेयार मगर छन्हिए उघार ।
रात का रतउँधी अँजोर का अन्हार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

भगवती प्रसाद द्विवेदी के दूगो गजल

[एक]

चाह बहुत बा, राहे नइखे
कतनो पवँरीं, थाहे नइखे

कुम्हलाइल सिरिजन के बिरवा
लह-लह पतई काहें नइखे ?

जर्जर बूढ़, बगइचा, पोथी
केहू के परवाहे नइखे

केकरा आगा हाथ पसारीं
फेरत लोग निगाहे नइखे

प्यार यार के खुल्लमखुल्ला
बाकिर होत निबाहे नइखे

अनका धन पर बिकरम राजा
दुखिया के ददखाहे नइखे

पीर हिया के अदहन बनिके
डभको 'कइसे, धाहे नइखे

[दू]

शहरी भौतिकता के जोम ठटाते नइखे
गाँव, मगर, दुखियारा, तबो भुलाते नइखे

घोर अन्हरिया में ढाढ़स बा एने दियना
आँखि ओने चुन्हियाता, डहर बुझाते नइखे

आस में दु:ख-दलिद्दर के परवाह रहल ना
काल्ह के चिन्ता में अब आज कटाते नइखे

जान कबो राकस के बसत रहे सुग्गा में
रक्तबीज के अब तऽ बाग अड़ाते नइखे

लंपटई सिरमौर बेवस्था में मौजूदा
देख रहल सब, लेकिन लोग चिहाते नइखे

✪

www.bhojpurisahityangan.com

शारदा पाण्डेय के एगो कविता

सागौन वन में

टहकार गर्मी के पूर्णमासी के अँजोरिया राति,
चन्द्रमा के हँसी से नहाइल राति,
अंग-अंग में हँसी-रास से
गुदरावत थिरकत राति !
एजू से ओजू तक कतना दूर तक
लोटिआइल जातीया अँजोरिया
जइसे ऊजर सारी में लपेट लेतिया !
राति हँसल, मोती झरल
राति खिलल, कोंई हँसल ।
वन झूमि गइल
कुल्ही धरती महकि गइल
साल के देव-नियर फेंड़
बतिआवे लगलन स ।
हवा कनफूसी करत रहल
पतइन के सरकत आँचर
सुनात रहल ।
बुद्ध आनन्द के कान्ह के सहारा लेले
ओहिजे बेलमि गइले !
साँस हाँफि गइल रहे !
आजु ऊ अस्सी बरिस के
हिसाब करत रहे !
गुरु-चेला दूनू का बोध भइल
यात्रा के पड़ाव आ गइल !
सागौन के वन में
टहटह अँजोरिया
ढरकावत रहे अमरित
रचत रहे इतिहास,
सुनात रहे समय के हास !
बनत रहे स्वर्ग-तीर्थ कुशीनगर !
दक्खिन के ओर चरण कइले
दूगो साल वृक्षन के बीच में,
डासल सेज पर, दहिना ओर करवटले
हाथ के उपवरन लगवले
करतल पर गाल टिकवले
ओठँघ गइले अमिताभ !
आनन्द शांत देखत रहले
बलिष्ठ सौम्य कालजयी देहधारी के
ज्योति ढारत आँखि
कमल के पँखुरी नियर
कतो दूर ताकत रहे,
कवनो दृश्य आवत रहे !
भँवरा नियर श्याम आँखि के पुतरी
आवत काल के ऊजर रेख से बन्हाइल
कतना चुप ?
पलक के फरकल थिराइल रहे,
एह पार्थिवता से दूर
कहाँ बहत रहे दृष्टि के धार ?
आनन्द ना बूझि पवलन !
बुला, बोधिसत्व अपने में समाहित रहलन !
तबे
एगो स्वर, स्थिर-नाद नियर गूँजल ।
ऊ कादो, स्वगत-कथन से
आनन्द के संबोधित रहे !
"आनन्द!
का जानतारऽ
कि हम कबो ना भागल रहलीं
जीवन से, समस्या से ।
भागल ना रहलीं कर्त्तव्य से !
सँकाइल ना रहलीं रोग से,
डेराइल ना रहलीं मृत्यु से ।
बुढ़ापा के जर्जरता हमरा के ना कँपवलस
हमरा के संन्यस्त मुसकान खींचि लिहलस!
हम बन्हा गइलीं ओह आकर्षण में
अभय के सम्मोहन में,

www.bhojpurisahityangan.com

निराभरण शोभा में
तेजस् मुसकान में!
बाकिर, भुलाइल ना ऊ गत दृश्य;
जन्म से अंत तक
सँकाइल अदिमी के पीर
चीर दिहलस भीतर तक!
रूप के असारता
बेधि गइल करेजा तक !
यशोधरा के रूप-मुस्कान
मुद्रा-मोह-समर्पण-जनन
बालक के दूधिया हँसी
कुल्ही चमकि गइल ।
अंतरतम के तार झनझना गइल ।
ओही के 'नित्य' करे के चाह,
सुझवलस इहे राह ।
संन्यासी के शांति के डोर से
बन्हाइल चाह
छोड़ा दिहलस महल के
पाषाणी नश्वरता से ।
चलि अइलीं अपना के जोहत
उरुवेला तक;
कतना दिन निश्चेष्ट तन
चिन्तन-जाग्रत रहल मन
कि साँस तक आपन सुत्र बुझाइल ।
दिन-रात के भेद समिटाइल !
बन्द आँखि में चमकत रहे
दु:ख, पीर, रोआई ।
अँजोर के तीर नियर हँसी के रोआई !
बुझाइल–
उत्साह-मूर्छा, आदि-अंत
इहे सत्य ।
कहाँ पराई मन ?
भागल तन से, रूसल मन से
जीवन रास ना आई !
सुजाता के पायस, अन्न-दूध के सुबास
फेरि दिहलस उन्मन से !
साँस के सिसकारी तक,
रहे के बा एहिजे !
करताल के ध्वनि नियर
प्राण कहाँ चलि जाई ? के बताई ?
चुकावे के बा नियति के बोल
जीवन पावल आ देह में रहल,
छन-छन के पीअल, आकण्ठ तृप्ति जीअल
दाय हऽ मानवता के !
रोअल ना हऽ साँच
दु:ख के सहे के परी आँच
बिना भय-सिसकी के,
बान्हे के परी तार निर्विकार संयम के ।
तबे, तन-मन सम, सौम्य हो जाई
'यशोधरा' धन्य हो जाई ।
'राहुल' मुक्ति बुझाई;
व्यक्ति 'तथागत' आ भाव 'बोधिसत्व' कहाई !
आनन्द ! हमरा आनन्द-तप-प्राप्ति के साक्षी !
हम जीवन से भगली ना; जिअलीं ।"
शब्द ठिठकल ।
झरत रहे तृप्ति-ज्योति आँखि के अँजुरी से ।
अंत के साक्ष्य लोर बनि
लटकि गइल आनन्द के आँखि में
वन शांत, पंछी नि:शब्द
अँजोरिया स्तब्ध !
पूरा जीवन प्रश्नाकुल
छितरा गइल
प्रकृति के एक-एक कण में ।
ई जीत रहल योद्धा के रण में ।
झहर-झहर अँजोरिया
बरसत रहल सागौन वन में

✪

www.bhojpurisahityangan.com

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' के दूगो गजल

[एक]

आदमीयत से जे केहू का इयारी हो गइल
गाँव का, दुश्मन बा ओकर सब जवारी हो गइल

जिन्दगी के दौड़ में आगा बहुत बाटे उहे
यार, जेकर एह घरी उरुआ सवारी हो गइल

एक सितुही दर्द भी ना एकरा पासे बँचल
सभ गँवा के ई जमाना बा भिखारी हो गइल

काल्ह जे गोदी में खेलत फूल अस लागत रहे
आज बेटी बाप के सिर बोझ भारी हो गइल

बात जे कइले रहीं हम आचरण-ईमान के
लोग लागल बुदबुदाये, अधकपारी हो गइल

रोशनी में सेन्ह मारत जेकि पकड़ाइल रहे
वक्त बाटे ओकरे, पक्का पुजारी हो गइल

एह तरे 'पीयूष' मौसम के बा बँटवारा भइल
फूल उनका, काँट सभ हमरा दुआरी हो गइल

[दू]

जब लगावे ना रहल तऽ पास आके का भइल
लोर बाटे आँख में तऽ मुस्किया के का भइल

चूर शीशा के छिटाइल बा शहर में, गाँव में
ईंट-पत्थर से बा घर पक्का बनाके का भइल

हादसा बा हर तरफ जब जड़ जमा लिहलस, हजूर
होश रउरा आज जे आइल, त आके का भइल

हो गइल खाली हिया 'पीयूष' अब जे प्यार से
घर में दुनिया भर के सुख-सुविधा जुटाके का भइल

✪

www.bhojpurisahityangan.com

मनोज कुमार सिंह 'भावुक' के तीन गो गजल

[एक]

बचपन के हमरा याद के दरपन कहाँ गइल
माई रे, अपना घर के ऊ आँगन कहाँ गइल

खुशबू-भरल सनेह के उपवन कहाँ गइल
भउजी हो, तहरा गाँव के मधुवन कहाँ गइल

खुलके मिले-जुले के लकम अब त ना रहल
विश्वास, नेह, प्यार-भरल मन कहाँ गइल

हर बात पर जे रोज कहे दोस्त हम हईं
हमके डुबाके आज ऊ आपन कहाँ गइल

बरिसत रहे जे आँख से हमरा बदे कबो
आखिर ऊ इन्तजार के सावन कहाँ गइल

[दू]

देखलीं जे बइठि के दरिया किनारे
डूब के देखला पर लागल भित्र, यारे

घर के कीमत का हवे, ऊहे बताई
जे रहत फुटपाथ पर लँगटे-उघारे

ना परे मन घर कबो बबुआ के भलहीं
रोज बुढ़िया भोर में कउवा उचारे

बस कहे के हम आ ऊ साथे रहीले
साथ का जब पड़ गइल मन में दरारे

ख्वाब में भी हम कबो सोचले ना होखब
वक्त ले जाई कबो ओहू दुआरे

[तीन]

ना रहित झाँझर मड़इया फूस के
घर में आइत घाम कइसे पूस के

के कइल चोरी, पता कइसे लगी
चोर जब भाई रही जासूस के

आज ऊ लँगड़ो दरोगा हो गइल
देख लीं, सरकार जादू घूस के

ख्वाब में भलहीं रहे एगो परी
सामने चेहरा रहे मनहूस के

जे भी बा, बाटे बनल बरगद इहाँ
पास के सब पेड़ के रस चूस के

तूहीं ना तऽ जिन्दगी में का रही
छोड़ के मत जा ए 'भावुक' रूस के

www.bhojpurisahityangan.com

सूर्यदेव पाठक 'पराग' के दूगो गजल

[एक]

आखिर अन्हार कबले
उनके सुतार कबले

पाइब गुलाब कबहूँ
गड़िहें ई खार कबले

उल्टा बही, बता द
पानी के धार कबले

हिम्मत के बा भरोसा
चल पाई रार कबले

खूबी के खामियन अस
होई प्रचार कबले

पलटी पराग मौसम
पतझड़ के मार कबले

[दू]

शुद्ध जब विचार बा
सब जगह दुलार बा

आँख खोल के चलीं
ना कहीं अन्हार बा

मन बसन्त बा अगर
हर घड़ी बहार बा

झूठमूठ नाज बा
जिन्दगी उधार बा

नाव जब बढ़त चलल
दूर कब किनार बा

लेखनी चलत रहल
आ रहल निखार बा

✪

जितेन्द्र कुमार के एगो कविता

काल्हुवाला चेहरा

ना जाने काहें खातिर
रोज-रोज नया-नया चेहरा
कीनेले बाजार से

साँझ खानि जवन चेहरा पहिनके
बइठल रहन दरबार में
सबेरे गइलीं त पवलीं
साँझवाला चेहरा उतारि के
राखि देले बाड़े ताखा पर

पूछलीं कि काहे जी ?
साँझवाला चेहरा त नीके लागत रहल
काहें उतारि देहलीं

समझावे लगलें कि
अइसन पापी जमाना आइल बड़ुये
कि एगो चेहरा राखि के
कतहीं के ना रहि जाइबि
जियते मरि जाइबि

जब जइसन, तब तइसन
चेहरा बनावे के सीखीं
काल्हु दंगा-विरोधी जुलूस में जाये के रहे
आजु दंगा में जाये के बड़ुये

बोलीं एके चेहरा से काम चली ?
एही में कवितो करेके बड़ुये

काल्हुवाला चेहरा रहे नकली
आजुवाला के बूझीं असली

✪

www.bhojpurisahityangan.com

राजीव रंजन गिरि के एगो कविता

काहें

काहें ना आवेली अब
बुढ़िया काकी चिलम सुलगावे,
पड़ोसन दादी असीस देवे,
बगलवाली चाची सुख-दुख बतिआवे,
काहें ना जाली
माई जिउतिया नहाए,
बिटिया निफिकिर होके खोंटे सरसो, बथुआ के साग,
काहें नइखे सुनात मंगल-गीत
काहें भुला गइली नानी
पहिलका कहानी,
काहें नइखे लउकत सावन के झूला
काहें छोड़ देलीं स गाँव के बिटिया
झिझिया, समाचकवा, जाट-जाटिन के खेल,
काहें नइखे होत
कुश्ती, कबड्डी आउर लाठी के खेल,
काहें नइखे बाजत ढोल-मजीरा
काहें लोग भुला दीहल
फगुआ, चैता, कजरी
काहें नइखन आवत
हफीज भाई फगुआ खेले,
रहमत काका छठ देखे,
काहें नइखे जात
मुन्ना भैया सेवई खाए,
सहदेव काका तजिया देखे,
काहें लइका नइख सन करत जिद
देखे खातिर मोहर्रम के मेला,
काहें नइखे लागत हमरा गाँव में चौपाल
नइखे होत पंचायत
काहें अगुताइल बा हमार गाँव
बने खातिर शहर ?

✪

जीतेन्द्र वर्मा के एगो कविता

लाल-लाल

हम बनब
लाल-लाल फूल
बाकिर, गुलाब के ना ।
हम बनब
लाल-लाल
टहकार फूल
सेमर के

हम ना करब
केहू के सजावट-बनावट
जइसहीं झरब
बीन ली कमली हमरा के
अपना पठरू के खियावे खातिर

पठरू खाई
खाके मनगरा जाई
मोटा जाई ।

पठरू के
नीमन दामे बेंच के
बनी कमली खातिर छागल
दियाई ओकरा बियाह में
जेसे जाये ना पावो कमली
लाल-लाल आगी के गोदी में ।

✪

www.bhojpurisahityangan.com

अंक के खास कवि : जौहर शफियाबादी

भोजपुरी के समर्पित गजलकार

❑ डॉ॰ शम्भुशरण

जौहर शफियाबादी भोजपुरी के बहुचर्चित आ समर्पित गजलगो बाड़न । आज के देहात आ शहर दूनू के जिनिगी पर इनकर खास नजर बा । इतिहास आ किंवदंतियन के आधार पर जिनिगी के जवन सुनहला सपना इनका भावुक मन पर बनल रहे, ओह से आज के जिनिगी के कवनो तालमेल ना देखके उनका कोमल मन पर झटका पर झटका लागत बा । कवि तिलमिला के कहता– **'एह तरे बा समय बेवफा हो गइल/हाल जिनिगी के बहुते बुरा हो गइल'** । आज मानवीय गुणन– 'सादगी, प्रेम, सरधा, दया आ क्षमा' से रहित शहरी जिनिगी के बनावटीपन आ पहिलका प्रेममय गँवई जिनिगी से ओकर कट चुकला के एहसास जौहर के बा– **'चाल देशी ना आइल शहर में नजर/बा बनावट के कतना शहर में असर'** आ ई एहसास निखालिस गँवई मन-मिजाज के कवि के नास्टेलजिक संवेदना के बहुते गहिराई में जाके झकझोर देता । हालाँकि आज के खून-खराबा आ लूटपाट से भरल गाँवनो के हालत बेहालते बा– **'आज हर मोड़ पर भूख बा, प्यास बा/गाँव जइसे बा अब करबला हो गइलें'** तबो **'गाँव के प्यार जौहर ना दिल से गइल/लाख काटे के कटलीं शहर में उमर'** । एकर वजह कइअक गो बा , बाकिर जवन सबसे बड़ वजह बा, ऊ बा– **'गाँव के छोड़के हम त अइलीं शहर/का मिलल, बस किराया के दमघोंटू घर'** । का गाँव आ का शहर, आज इनसानियत कतहूँ लउकत नइखे, हालाँकि जौहर अपना नजर से परदा उठा के बार-बार इनसानियत के टोहे के कोसिस कर रहल बाड़न ।

अइसे त, कवनो भाव-संवेदना आज के गजलन के दायरा के भीतरे बा, बाकिर साँच पूछीं त गजल के नेंव प्रेम के जमीन आ ओह से उपजल लोर आ दर्द के गिलावा पर ही डलाइल रहे आ एही नेंव पर कतना आलीशान आ कालजयी महल खड़ा भइल सन, जिन्हनी के भव्यता में आजो तनिको कमी नइखे आइल । आधुनिक शायरी, भलहीं, प्रेम भा अन्य रिवायती कथ्यन के नकारत होखे, बाकिर रिवायती शायरी के आकर्षण से रचनाकार लोग सहजे मुक्त नइखे हो पावत । ओह लोग का रचना में परंपरा-प्रथित

www.bhojpurisahityangan.com

कथ्य प्रश्रय पाइये जाताड़ सन । जौहर भी एकर अपवाद नइखन । उनका गजलन में इश्के हकीकी, इश्केमजाजी, नीति-पाठ आ उपदेश आदि रिवायती शायरी के सब रंग मौजूद बा । मिसाल के तौर पर–

मोल मोती के का रहल 'जौहर'
जहिया ओकर उतर गइल पानी
x x
तोहरा वादा करे के गरज का रहे
जी रहल बानी हम आसरा देख के
x x
उहाँ राग अनहद, अलख के बा 'जौहर'
जहाँ ज्ञान-गंगा तरल बनके आइल
x x
दान अँजुरी से करके लवटल जे
ओकरा अँजुरी में भर गइल पानी
x x
प्रेम में चोट लागेला लगबे करी
चाहे तहरा लगे, चाहे हमरा लगे

'बहुत रंग बा भोजपुरी गजल में / दिया साधना के जरा देले बानी', जौहर का साधना के दिया हाल-फिलहाल से ना, एगो लम्बा अरसा से जर रहल बा । सन् 1992 में उनकर गजल-संग्रह 'धरोहर' आइल रहे आ तब से अबले उनकर मौन साधना अनवरत जारी बा । कथ्य आ शिल्प के दिसाईं भी जौहर के प्रतिभा के जौहर उनका गजलन में साफे लउकत बा । कतहीं-कतहीं त बड़ा धारदार प्रयोग भइल बा :

चान हमरा पहुँच के नू बाहर रहे
रउरा मुठ्टी के का ई दसा हो गइल

जौहर के गजल के भासा सहज-सरल आ भोजपुरिया मिठास के एहसास करावेवाली बा । भोजपुरी के खाँटी शब्दन आ मुहावरन के प्रयोगो सराहे जोग बा । 'पानी' वाली गजल खास तौर पर उद्धरणीय बा । एही बहर आ जमीन पर कविवर जगन्नाथ जी के भी एगो गजल चर्चित रहल बा ।

कुल्हि मिलाके, जौहर शफियाबादी के गजलन में एक ओर रिवायती शायरी के इन्द्रधनुषी छटा बा, त दोसरा ओर आधुनिक आ प्रगतिशील सोच के अभिव्यक्ति । कुदरती सौन्दर्यबोध आ जिनिगी के दर्दीला एहसास उनका गजलन के महत्त्वपूर्ण बनावत बा ।

कबो झील, तितली, कमल बन के आइल
दरद जिन्दगी के गजल बन के आइल

✪

www.bhojpurisahityangan.com

जौहर शफियाबादी के आठ गो गजल

[एक]

एह तरे बा समय बेवफा हो गइल
हाल जिनिगी के बहुते बुरा हो गइल

चान हमरा पहुँच के नू बाहर रहे
रउरा मुट्ठी के का ई दसा हो गइल

आज हर मोड़ पर भूख बा, प्यास बा
गाँव जइसे बा अब करबला हो गइल

जेके पूजे में सउँसे सिराइल उमिर
आज ऊहो बा देखीं खफा हो गइल

हम जे रमली ए जौहर गजल-गीत में
लोग निहँसे लगल, बावला हो गइल

[दू]

तन के तितली पर मखमल के परदा लगे
मन के पंछी प कवनो ना पहरा लगे

बात अइसन करऽ जे हुलस जाये मन
नीक हमरा लगे, नीक तहरा लगे

सूना-सूना महल मन के तोहरा बिना
सून साधन के एहवाती अँचरा लगे

प्रेम में चोट लागेला, लगबे करी
चाहे तहरा लगे, चाहे हमरा लगे

हमरा पासे ए 'जौहर' बा का अब बँचल
कुछ जो होखे त आपुस में बखरा लगे

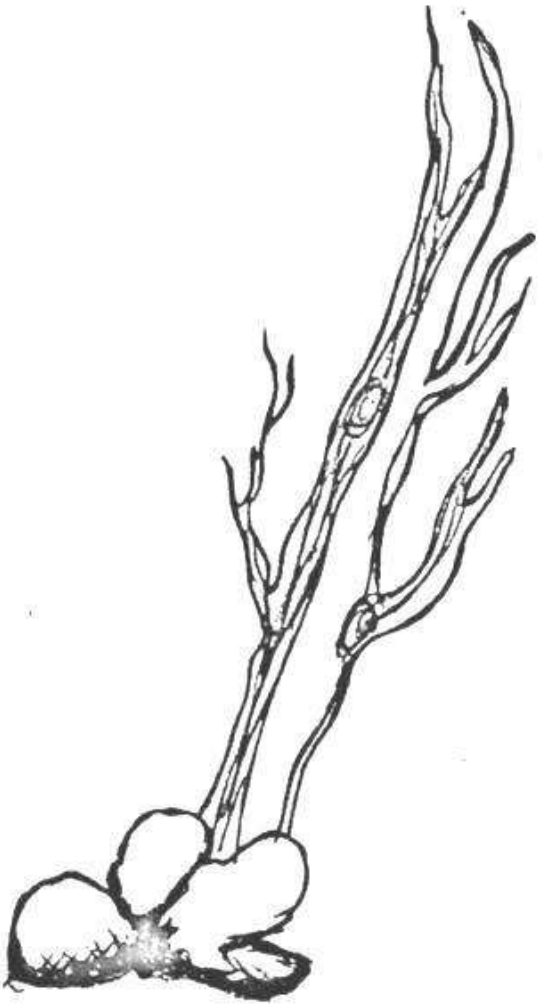

www.bhojpurisahityangan.com

[तीन]

कबो झील, तितली, कमल बन के आइल
दरद जिन्दगी के गजल बन के आइल

कबो याद के आग बेरंग झलकल
कबो ताज जइसन महल बन के आइल

कहीं कइसे आइल ह अमरित ना सोझा
मगर जे भी आइल, गरल बन के आइल

कबो लोर बिरहा के पतझर के साखी
कबो गंगा-जमुना के जल बन के आइल

ऊहाँ राग अनहद, अलख के बा 'जौहर'
जहाँ ज्ञान-गंगा तरल बन के आइल

[चार]

साध सावन के उमड़ल घटा देख के
आँख पथरा गइल रास्ता देख के

भाँप जालीं सजी भाव मजमून के
हम लिफाफा प टाँकल पता देख के

तोहरा वादा करे के गरज का रहे
जी रहल बानी हम आसरा देख के

थाह केहू के इहवाँ मिलल बा कठिन
लोग बोलत सभे बा हवा देख के

दोसरा के कहीं का, सरम आ रहल
खुद से खुद के ए 'जौहर' दगा देख के

www.bhojpurisahityangan.com

[पाँच]

सच्चा-सच्चा प्यार गजल हऽ
मन-गंगा के धार गजल हऽ

मन भाये, दिल छू-छू जाये
रचना के सिंगार गजल हऽ

दुख के अँधियारी कोठरी में
आशा के उजियार गजल हऽ

'जौहर', हऽ इतिहास समय के
जिनिगी के व्यापार गजल हऽ

[छव]

तोहरो अँखियन के मर गइल पानी
सुन के अँखियन में भर गइल पानी

लोर के मोल का उनुका सोझा
आके अँखियन में डर गइल पानी

नर्क नाला-नदी रहे बाकिर
जाके गंगा में तर गइल पानी

दान अँजुरी से करके लवटल जे
ओकरा अँजुरी में भर गइल पानी

मोल मोती के का रहल 'जौहर'
जहिया ओकर उतर गइल पानी

www.bhojpurisahityangan.com

[सात]

चाल देशी ना आइल शहर में नजर
बाा बनावट के कतना शहर में असर

गाँव के छोड़ के हम त अइलीं शहर
का मिलल, बस किराया के दमघोंटू घर

रउरा मिलला से हमरा पता ई चलल
खुद से कतना भइल बा शहर बेखबर

सादगी, प्रेम, सरधा, दया आ क्षमा
ना बा गुन कवनो ना बा शहर का हुनर

गाँव के प्यार जौहर ना दिल से गइल
लाख काटे के कटलीं शहर में उमर

[आठ]

हँसी उम्र भर के भुला देले बानी
दरद जिन्दगी के सजा देले बानी

कहाँ एको इन्सान लउकत बा सोझा
नजर से त परदा हटा देले बानी

बहुत रंग बा भोजपुरी गजल में
दिया साधना के जरा देले बानी

बुता देला जे आग मन के ए 'जौहर'
उहे आग दिल में लगा देले बानी.

✪

www.bhojpurisahityangan.com

आत्म-मंथन

सदी के आखिर आ शुरू में भोजपुरी कविता

❑ रामनिहाल गुंजन

भोजपुरी के यशस्वी गीतकार जगन्नाथ के संपादन में निकल रहल भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक 'कविता' के प्रकाशन के एह साल तीन बरिस पूरा हो गइल । अबले ओकर बारह अंक प्रकाशित हो गइल बा । 'कविता' के प्रकाशन के एह अर्थ में एगो घटना भी मानल जा सकेला, काहेंकि एकरा पहिले भोजपुरी में कवनो कविता के मासिक आ त्रैमासिक पत्र ना छपल रहे । एही से एह पत्रिका के एगो आपन महत्व बा । 'कविता' के पहिल अंक (जुलाई, 1999) में संपादकीय के पन्ना में एह बात के उल्लेख कइल गइल बा कि "'कविता' के ई प्रवेशांक रउरा हाथ में सउँपत हमरा असीम आनन्द के अनुभूति हो रहल बा । अपना लघु कलेवर में 'कविता' यथासंभव भोजपुरी कविता के उत्कर्ष प्रस्तुत करी, इहे एकर एकमात्र उद्देश्य बा । संपादक का नाते हमरा कुछ खास नइखे कहे के । कहे के गुंजाइसो नइखे एह लघु काया में । जे कहे के बा, 'कविता' के ई अंक कही आ एकरा के देख के, पढ़-गुन के अपने का कहब । हम बस अतने कहब कि राउर हर प्रेरणीय बात-विचार, हर ग्राह्य सर-सुझाव 'कविता' सहर्ष सकारी, ओह पर गहराई से सोची-विचारी आ जहाँले हो सकेला, ओकरा अनुरूप अपना के ढारी-सँवारी । 'कविता' में राउर कविता रउरा खातिर रही, 'कविता' बस राउर रही" ।

कविता के संपादक के एह वक्तव्य से पता चल सकेला कि एकरा प्रकाशन का पाछे एगो शुद्ध अव्यावसायिक दृष्टिकोण रहल बा, जवना के एकमात्र उद्देश्य भोजपुरी कविता के प्रचार-प्रसार बा । एह पत्रिका के उद्देश्य स्तरीय रचना के प्रकाशन रहल बा, जेकर कतना निर्वाह हो सकल बा, एकरा से सभके अवगत भइल जरूरी बा । एह में कवनो शक-शुबहा के गुंजाइश नइखे कि जगन्नाथ जी एगो सजग रचनाकार बाड़े, एहसे उनका में संपादकीय विवेको भरपूर बा । उहाँ का रचना के संयोजन आ संपादन पर पूरा-पूरा ध्यान बा, एकर एहसास रचनन के अवलोकन से हो जाता । अबले निकलल बारहो अंकन में खास करके गीत, गजल, दोहा आ कविता प्रकाशित भइल बा । एह पत्रिका के दूगो खासियत बा । हर अंक में भोजपुरी के दिवंगत रचनाकार का स्मृति में उनकर एगो यादगार कविता, गीत भा गजल 'तर्पण' स्तम्भ के तहत प्रकाशित कइल जा रहल बा । ई क्रम दूसरा अंक से शुरू बा । अबले भोजपुरी के एगारह गो दिवंगत रचनाकारन– उमाकांत वर्मा, डॉ॰ विश्वरंजन, तेगअली 'तेग', रामकृष्ण वर्मा, श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती', मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी', वेदनन्दन, भोलानाथ गहमरी, विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, डॉ॰ जितराम पाठक के गीत, गजल, दोहा आ कविता प्रकाशित कइल गइल बा । साहित्य सेवी लोगन के इयाद में चलावल जा रहल ई एगो स्वस्थ आ सर्जनशील परम्परा के सूचक बा ।

एह पत्रिका के दूसर खासियत ई बा कि एकरा हर अंक में एगो खास कवि के सात भा आठ गो कविता, गीत, दोहा आ गजल छपल बा । ई क्रम आगे भी जारी रही ।

www.bhojpurisahityangan.com

एह स्तंभ के तहत जे कवि भा गीतकार प्रकाशित भइल बाड़े, ऊ भोजपुरी के प्राय: प्रतिनिधि रचनाकार बाड़े । उनका प्रतिनिधि रचना पर एगो समीक्षकीय टिप्पणी भी प्रकाशित कइल गइल बा, जेकरा से खास कवि के जीवन-दृष्टि, रचना-दृष्टि आ चेतना पर भरपूर प्रकाश पड़ल बा । एह क्रम में अबले बारह कवि– पाण्डेय कपिल, अशोक द्विवेदी, पी. चन्द्रविनोद, मिथिलेश गहमरी, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष', सूर्यदेव पाठक 'पराग', तैयब हुसैन 'पीड़ित', मनोज कुमार सिंह 'भावुक', भगवती प्रसाद द्विवेदी, कृष्णानंद कृष्ण, पाण्डेय सुरेन्द्र आ जयकांत सिंह 'जय' के गीत, गजल, दोहा आ कविता प्रकाशित भइले बा । ओह कवितन के अलग-अलग विवेचन करे के तत्काल अवसर नइखे । एह से, कुछ खास कवि के कुछ खास रचना-पंक्तियन का ओर ध्यान आकृष्ट कइल जा सकेला ।

पाण्डेय कपिल पिछली पीढ़ी के कवि, कथाकार भइला का बावजूद एने भोजपुरी गीत आ गजल के क्षेत्र में सक्रिय भइल बाड़े । उनका गीत आ गजल में जिनिगी के जवन सहज आ सजीव बिम्ब उभर के आइल बा, ओकरा से उनका काव्य-संवेदना के सहजे में एहसास कइल जा सकेला । उनका गजलन के कुछ शेर गौरतलब बाड़ सन – **'साफ तन मन मगर मइल बाटे/आदमी का से का भइल बाटे, मन के पंछी कहाँ उड़ान भरो/आज आकाश ना फइल बाटे'** । अइसे त, कपिल जी आस्था-भरल जिनिगी के गीत आ गजल के रचनाकार बाड़े, बाकिर कहीं-कहीं निराशा भा जिनिगी के नियराइल साँझ के चित्र भी उनका गीतन में देखल जा सकेला, हालाँकि एह तरह के भाव-बोध महादेवी वर्मा आ निराला के गीतन में भी व्यंजित भइल बा, जे स्वाभाविक बा । एकरा अलावे जे खास कवि बाड़े, ओह लोग के कुछ कविता-पंक्तियन से ओह लोग के रचना-अभिप्राय के समझल जा सकेला । देखीं– **"क्रांति का इतिहास में नारा फसल बा / हो न हो ई दाव छन के छल रहल बा"** (पी. चन्द्रविनोद), **"लागल बा आग, आके देख लीं/जरत बा बाग, आके देख लीं/नगर में भुखमरी के नाम पर/ बँटाता साग आके देख लीं"** (मिथिलेश गहमरी), **"कविता अथाह पीर ह/परसउत के/सुनुगत- धुआँत/आगी ह कउड़ के/मत जाईं एकरा/सोझबकई आ चुप्पी पर/कविता धन्हकल/अंगार ह भउर के ।"** (भगवती प्रसाद द्विवेदी), **"राजनीति के गाँव में पसरत जब से जाल/मानवता के लोप से लोग भइल बेहाल"** (कृष्णानन्द कृष्ण), **"कभी जे गाँव से निकलल रहीं ऊ गाँव अब नइखे/ कटा बरगद गइल बाटे, कहीं ऊ छाँव अब नइखे"** (पाण्डेय सुरेन्द्र), **"सूरज से ई छँटी कुहासा/अब ई मन के भरम बा बाबू"** (जयकांत सिंह 'जय') ।

एने हिन्दी आ भोजपुरी कविता में एक बात खास तौर पर देखल जा रहल बा, जेकर सरोकार अपना देश, समाज आ जन-जीवन से बा । पहिले भोजपुरी में जवन गीत लिखल जात रहे, ओकरा में अपना मन के भाव त प्रगट कइल जात रहे, बाकिर देश, समाज आ जन-जीवन कम-से-कम भा ना के बराबर रहत रहे । एहसे, ओकरा बारे में कवनो नया भाव-बोध विकसित ना हो पावत रहे । अब के भोजपुरी कविता में एगो नयापन दिखाई पड़ रहल बा, जे भोजपुरी साहित्य के संभावनाशील भविष्य के सूचक बा । एकरा पाछे एगो खास कारण ई रहल बा कि अब भोजपुरी में हिन्दी के कुछ सजग लेखक भी सक्रिय बाड़े, जिनका सामने निजी भावबोध से ज्यादा महत्त्वपूर्ण देश आ समाज के सामाजिक आ राजनीतिक

www.bhojpurisahityangan.com

भावबोध बा । कहे के मतलब ई कि भोजपुरी कविता पर हिन्दी कविता के गहरा असर पड़ल बा । 'कविता' के संपादको एकर चर्चा अपना संपादकीय पन्ना (कविता-4) में कइले बाड़े आ सकरले बाड़े कि भोजपुरी कविता पर हिन्दी कविता के गहरा प्रभाव पड़ल बा । एही से आज के भोजपुरी कविता श्रृंगार रस प्रधान नइखे रह गइल । ई बात सही बा कि आजो कुछ कवि (हिन्दी भा भोजपुरी के) रीतिकालीन युग में जी रहल बाड़े, जिनकर मुख्य रचना श्रृंगारप्रधान आ रोमानी बा । बाकिर, आज के माहौल के देखके ओह लोग का कविता में भी बदलाव अपेक्षित बा ।

ई सुखद संजोगे बा कि सदी के आखिर में आ नयकी सदी के शुरू में प्रकाशित होखेवाली एह पत्रिका में जवन गीत, गजल, दोहा आ कविता छपल बा, ओह में एगो नयापन जरूर रहल बा आ ओकर भाव-बोध दूसर अनेक पत्रिकन में छपेवाला गीत, गजल आदि से थोड़ा भिन्न बा । एहसे, ई बात आसानी से समझल जा सकेला कि एह में प्रकाशित अधिकांश कविता आज के भोजपुरी कविता के प्रतिनिधित्व करे में सक्षम बा । कविता, दरअसल, जिनिगी के विविधता के चित्रित करे के एगो जरूरी माध्यम रहल बा । ओह में जिनिगी के सुख-दुख, आशा-निराशा, संकल्प आ प्रतिरोध के भी अभिव्यक्ति होत रहल बा । एहसे, कविता के समग्रता में देखल जरूरी बा । ई बात दूसर बा कि कविता के एगो मुख्यधारा होला, जेकरा में जिनिगी के मौजूदा सवालन के नजरअंदाज कइल असंभव होला । एही से कविता आ साहित्य के कवनो विधा में एकर ध्यान रखल जरूरी होला । एह दृष्टि से देखल जाव, त 'कविता' में प्रकाशित अनेक रचनन में एकर सफल निर्वाह भइल बा । एह दिसाई अलग-अलग कवि के काव्य-प्रकृति के विवेचन ना करके समवेत रूप में कइल जरूरी बा । 'कविता' में प्रकाशित सब गीत, गजल, दोहा आ कविता के ध्यान में रखत ओकरा के तीन श्रेणी में बाँटल जा सकेला । एक प्रकार के कविता में श्रृंगारिक भाव के अभिव्यक्ति भइल बा त दूसरा तरह के कविता में निजी भावबोध के प्रचुरता बा । तीसर तरह के कविता में सामाजिक यथार्थ पर कवि के विशेष जोर बा । एह दृष्टि से देखल जाव, त बारहो अंकन में तीनो श्रेणी के कवि बाड़े, कवनो में कम, कवनो में ज्यादा । पहिला श्रेणी के कविता के उदाहरण देखीं– **"तहार सुधि आवते/लहरे लागेला ताल/फूल-फूल दूसा कोढ़ी से लेके रंग/सँवरेले कल्पना ।"** (अशोक द्विवेदी), **"पिहिका अस पियराइल देहिया/घाम सहे ना पानी/अखड़ेरे का कटी उमिरिया/चिहुँकत रही जवानी ?/बँसुरी के धुन घूम मचावे/चल सतरंगी चाल/चाल से घबराइल मन ।"** (रिपुंजय निशान्त), **"पलक असरा में बिछाके/रात जागीले/नेह के हम चासनी में/प्यार पागीले ।"** (पी. चन्द्रविनोद), **"पोर-पोर में पीरा पसरल/नस-नस टीस समाइल/असरा का दुअरा ना आहट/कबो नेह के आइल"** (रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'), **"मौसम निर्मोही बा नथले उत्पात/केकरा से प्रकट करीं मनवा के बात ।"** (सूर्यदेव पाठक 'पराग')

अइसे त, श्रृंगार रस के कविता के प्रचलन अबहियों बा । प्रेम, होली, वसंत, विरह-वर्णन आदि पर लिखल गीत भा कविता में श्रृंगार रस के अभिव्यक्ति स्वाभाविके बा । बाकिर, एने के भोजपुरी गीत आ कविता में एकरा उलट प्रगतिशीलता के भाव साफ दिखाई पड़ रहल बा । 'कविता' के एह अंकन के देखला से पता चलता कि आज के

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी कविता में श्रृंगार रस के जगह पर हास्य व्यंग्य आ सामाजिक, राजनीतिक विडम्बना के प्रति आलोचनात्मक रुख प्रमुख हो गइल बा । फिर भी निजी पीड़ा आ संत्रास के गीत लिखेवाला लोगन के भोजपुरी में कमी नइखे । एह दृष्टि से कुछ रचनन के कुछ पंक्तियन पर ध्यान बरबस जाता– "सूत गइल मनवा के राग/जिनगिया के गीत ना रचाइल" (रिपुंजय 'निशान्त'), "बारी बन्हरिया के बाटे अब आइल/जिनगी का दियरा के तेल बा सुखाइल/बाती सुखाके भइल बा दनउरी" (बरमेश्वर सिंह), "दरद दिल में अँगेजे के लकम बा/कबो ओठन पर आइल आह नइखे" (पाण्डेय कपिल), "काँट भरल जिनगी में /कब खिली गुलाब ?" (सूर्यदेव पाठक 'पराग'), "हमरा से दिल के दर्द कहाइल ना आज ले" (साकेत रंजन प्रवीर), "जिनिगी के जख्म, पीर जमाना के घात बा" (मनोज कुमार सिंह 'भावुक'), "चुभन का नदी में बा/जिनिगी के नाव" (रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'), "जिन्दगी के दर्द के सौगात बा बाकी अभी/दिन के चरचा का करीं जब रात बा बाकी अभी" (राधिका रंजन सुशील), "आदमी घर के अपने सतवले बहुत/कुल्हि भलाई कइल बेअसर हो गइल" (मुफलिस) ।

सुखद बात ई बा कि 'कविता' के एह अंकन में श्रृंगारप्रधान भा निजी भाव– पीड़ा, संत्रास, कुंठा आदि का अपेक्षा सामाजिक यथार्थ आ राजनीतिक विसंगति के चित्र ज्यादा बा । एह से, सदी के आखिर में भोजपुरी कविता में जवन बदलाव दिखाई पड़ रहल बा, ओकर संकेत एह बात का ओर बा कि आज के भोजपुरी कवि भी हिन्दी कवि के तरे राजनीतिक चेतना से लैस हो रहल बाड़न । एहमें अधिकांश कवि जे लोग नयी पीढ़ी के बा, अपना कवितन में सामाजिक आ राजनीतिक चेतना के परिचय दे रहल बाड़न । अइसे समवेत रूप में देखल जाय, त सामाजिक चेतना आ राजनीतिक चेतना के अलग श्रेणी कइल जा सकेला । सामाजिक चेतना के कवि बाड़न– रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष', अशोक द्विवेदी, हरिकिशोर पाण्डेय, भगवती प्रसाद द्विवेदी, बरमेश्वर सिंह, जवाहरलाल बेकस, आनन्द सन्धिदूत, ब्रजकिशोर, बलभद्र, तैयब हुसैन पीड़ित, मिथिलेश गहमरी, जगन्नाथ, पी. चन्द्रविनोद, सत्यनारायण, कैलाश गौतम, तंग इनायतपुरी, जितेन्द्र कुमार, सूर्यदेव पाठक 'पराग', सुरेश काँटक, कुमार अरुण, शिवपूजन लाल विद्यार्थी, सतीश प्रसाद सिन्हा, आदित्य नारायण, प्रकाश उदय, शारदानंद प्रसाद, दयाशंकर तिवारी, पाण्डेय सुरेन्द्र, कुमार विरल, अक्षय कुमार पाण्डेय, रघुनाथ प्रसाद विकल, ब्रजभूषण मिश्र, हीरा लाल हीरा, सविता सौरभ, शंभुनाथ उपाध्याय, अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे', कृष्णानन्द कृष्ण, हरीद्र 'हिमकर', जौहर शफियाबादी, शिवजी पाण्डेय 'रसराज' आ जयकांत सिंह 'जय' । एह तमाम कवि लोगन का कविता में सामाजिक यथार्थ कवनो ना कवनो रूप में चित्रित भइल बा । इहाँ स्थानाभाव के चलते कविता के उदाहरण देल संभव नइखे बुझात ।

तीसर आ आखिरी श्रेणी के कवि लोगन के कविता पर राजनीतिक चेतना के प्रभाव के जहाँ ले बात बा, ओकर चर्चा पहिले हो चुकल बा यानी हिन्दी के प्रभाव के चलते भोजपुरी में भी सामाजिक आ राजनीतिक चेतना के कविता लिखाए लागल । भोजपुरी में खास करके 'कविता' के एह अंकन में प्रकाशित कवियन में कैलाश गौतम, सत्यनारायण, जितेन्द्र कुमार, आदित्यनारायण, तैयब हुसैन 'पीड़ित', सतीश प्रसाद सिन्हा, पाण्डेय सुरेन्द्र,

www.bhojpurisahityangan.com

भगवती प्रसाद द्विवेदी, बरमेशवर सिंह, शिवपूजनलाल विद्यार्थी, ब्रजभूषण मिश्र, कृष्णानन्द कृष्ण, जयकांत सिंह 'जय', मिथिलेश गहमरी आदि के कविता, गीत, दोहा भा गजल में ई चेतना देखल जा सकेला । एकरा के उदाहरण से समझल जा सकेला– "कोट बिकत फैसला बिकत हौ/गुन्डन में अब जिला बिकत हौ/बैपरियन में सउदा जइसे/नेतवन में इंडिया बिकत हौ" (कैलाश गौतम), "लूटमार के टंटा सगरे/बइठल ब्राड़ऽ केकरा असरे/लोकतंत्र के गाय पेन्हाइल/दूहऽ जतना दूहल सँपरे" (सत्यनारायण), "शांति खातिर अपील करेवाला/आरंभ कइलस युद्ध/शांतिप्रिय लोगे मारल/गाँधी, मार्टिन, लूथर, किंग/रोजा लक्जमवर्ग एलेदे/मुजीब, नजीबुल्ला आ छात्र नेता चन्द्रशेखर के" (जितेन्द्र कुमार), "अब बंद हो जाई बिलार अइसन ताकल/खतम हो जाई मलकियत अउर सासन ।" (आदित्य नारायण), "कहाँ निशाना बा सधल होता कवन शिकार/अल्ला-ईश्वर एक ही बन्दा में तकरार" (तैयब हुसैन पीड़ित), "का बतलाईं देश के कइसन बाटे हाल/जनता पीयर हो रहल नेता होता लाल" (सतीश प्रसाद सिन्हा), "माथे पगड़ी बाँध के ले हाथे बन्दूक/अइसन राजा गाँव के दिहलस मड़ई फूंक" (पाण्डेय सुरेन्द्र), "कामधेनु जनता हई, ग्वालन ई सरकार/मन माफिक दूहल करे, जब जतना दरकार" (भगवती प्रसाद द्विवेदी), "शोषित जन अब का करे, करो त केकर आस/पार्टी पर बा छा गइल, अपराधी, ऐयाश" (बरमेश्वर सिंह), "देश-प्रेम ऊफर पड़ो, बस कुर्सी से प्यार/राजनीति अब बन गइल महज एक व्यापार" (शिवपूजन लाल विद्यार्थी), "मसला जनहित के फँसल राजनीति के दाँव/संसद के आवाज बा जस कउआ के काँव" (ब्रजभूषण मिश्र), "आजादी कइसन मिलल, कइसन भइल सुराज/जनता गौरेया बगल नेता बनले बाज" (कृष्णानंद कृष्ण), "देशभक्ति के नया नमूना/कुर्सी ला तकरार बा पंचे" (जयकांत सिंह 'जय') ।

एह तरे, देखल जाव, त 'कविता' में प्रकाशित्त कविता, गीत आ गजल के चुनाव पर संपादक के खास ध्यान बा । अइसे त, कुछ अंकन में कुछ कमजोर शिल्प आ कथ्य के कविता भी परोसल गइल बा, जेकरा से बचल जरूरी रहे । फिर भी, एह अंकन के महत्व बाद में समझल जाई, जब भोजपुरी कविता में सामयिक चेतना पर खोज के काम शुरू होई आ ओकर मूल्यांकन पेश कइल जाई । जहाँ ले नया सदी में भोजपुरी कविता के भूमिका के सवाल बा, 'कविता' के तीसरा अंक के संपादकीय पन्ना में ई कहल कि 'आज के अधिकांश साहित्य मानव के घुटन आ टूटन के साहित्य भर रह गइल बा । ओह में मानव का समग्रता के प्रतिष्ठित करे के कवनो कोशिश नइखे दृष्टिगत होत' उचित नइखे लागत काहेंकि आज के अधिकांश साहित्य में आस्था आ विश्वास, गलत परंपरा आ व्यवस्था के विरोध आउर आदमी के विकास पर ज्यादा जोर देखल जा सकेला । 'कविता' के एह अंकन में छपल अधिकांश कविता, गीत, गजल आ दोहा के उदाहरण से भी ई बात समझल जा सकेला । एह से आज के हिन्दी भा भोजपुरी कविता के भविष्य उज्ज्वल बा, एहमें कवनो शक-शुबहा के गुँजाइश नइखे ।

✪

www.bhojpurisahityangan.com

कसउटी

घुप्प अन्हरिया से अँजोरिया का ओर

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी

आज-काल्ह साहित्यिक हलका में दू किसिम के रचनिहारन के डँड़ार साफे रेघरियावल जा सकेला । एगो कतार ओइसन लोगन के बा, जेकर मकसद रचे में कम आ एक-दोसरा के टाँग खिंचाई-छीछालेदर करे में आउर खुद के ऊँच आसन पर जमाके मठाधीशी करे में बेसी बा । एह से ठीक उलट दोसरा किसिम के सिरिजनहार एह बात के इचिकिओ परवाह ना करसु कि उनका साहित्य में कबो कवनो जगह मिली कि ना । ऊ त खाली सिरिजे आ सरजन करे में बिसवास राखेलन । कविवर बद्री नारायण तिवारी 'शाण्डिल्य' एही दोसरका कोटि के रचनाकार हईं आ कई दशकन के साहित्य-साधना उहाँ के कृतियन में उकेरात आइल बा । छिहत्तर बरिस के एह उमिर में उहाँ के साहित्य खातिर, अब खास तौर पर भोजपुरी कविता खातिर जिए-मूवे के समरपन भाव देखे जोग बा ।

'गिनऽ तानी अँगुरी के पोर' में परुवे साल 'शाण्डिल्य' जी समय-संदर्भ से गहिर सरोकार बनावत समाज के जरत-बरत, दहकत सवालन पर विविधवर्णी काव्य-रचनन के मार्फत अँगुरी रखले रहलीं । बाकिर, सद्यः प्रकाशित संगरह 'चललऽ सुरुज छितिज के ओर में, उहाँ के सरजक के एगो अलगे रूप साफ झलकत बा । हिन्दी कविता में 'छायावाद' मील के पाथर साबित भइल बा आ ओहू घरी 'शाण्डिल्य' जी साहित्य सिरिजे में लवसान रहलीं । नतीजा ई बा कि ओह छायावाद (खास तौर से बच्चन जी के 'निशा-निमंत्रण') के छाया शुरू से आखिर ले संगरह के रचनन में नीके तरी देखल-महसूसल जा सकेला । साँझ, रात, भोर, फजीर के बेरा के बहाने कुदरत के मानवीकरण आ भोजपुरिया गाँव-जवार के भुलाइल-बिसरल शब्द-चित्र जियतार ढंग से उकेरल गइल बा । बुझिला कवि जवना घरी किशोरावस्था में गाँव छोड़ले रहे, ओह घरी के गाँव ओकरा इयाद-पटल पर आजुओ नाचत बा आ ओकरे जीवन्त अभिव्यक्ति एह एकतीस गीत-रचनन में पोढ़ता आउर सहजता का संगे भइल बा । स्व-अनुभूति आ सह-अनुभूति के गहिर संवेदना इन्हनीं के खासियत बा ।

ऐतिहासिक मिथकन, गाँव-गिराँव के कुदरती बिम्बन, टटका प्रतीकन के जरिए रचनन के प्रभावी बनावे के भरपूर उतजोग कइल गइल बा । एक तरफ थाकल-खेदाइल बेहाल सुरुज, उतरत साँझ खा के गरहुआइल दिसा, गदराइल अन्हरिया, आसमान में जोन्हियन-ध्रुवतारा के जमावड़ा, उदित शुकवा के दृश्य, त दोसरा ओर सियार के 'हुआँ-हुआँ' के शोर, साँप देखिके कुक्कुर के भउँकल, भुकभुकवा के अन्हरचटकी, झींगुर के सहगान, उरुवा के बोल, परिहरा के पिहिकल आ मुरुगा के बाँग । प्रकृति के ई अनुपम

www.bhojpurisahityangan.com

छटा, जवन गाँवो खातिर अब सपना हो गइल बा, एह रचनन में देखते बनत बा आ भुलाइल-बिसरल गाँव के सहज सुभाव मन के आँतर के भावुक-व्यथित क देत बा । मउसम के जादू-टोना के एहसास आ साँढ़ रूप में ब्रह्म से भेंट 'शाण्डिल्ये' जी जइसन पहुँचल कवि करि सकेला । बीच-बीच में निचला तबका के पीर आ जमीनी सच्चाई के उकेरे में रचनिहार के वैचारिक प्रतिबद्धता साफ जाहिर होत बा । 'आवत होइहें, सेंकीं रोटी', 'महतारी के गोदी में पसरल नन्हका के झरत लोर', 'पुका फारि रोवति रमरतिया', 'जरत जवानी, बिछुरल रसिया', 'मउवत थथमल रहलि रातभर'– जइसन प्रयोग मन के मथे आ घवाहिल करे में समर्थ बा ।

बाकिर तबो, कवि निरास नइखे । ऊ वातावरन के ललाई, छिटकत अँजोरिया का संगही कान्ह प जिम्मेवारी के बोझा सगर्व ढोवे के ऐलान करत बा आ निरास-हतास मन के जिजीविषा से भरि देत बा । घुप्प अन्हरिया से अँजोरिया का ओर ले जाएवाली ई शृंखलाबद्ध कविताई 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के आवाहन करत 'सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्' के पुनर्स्थापना के दिसाई एगो सार्थक-जीवन्त पहलकदमी कहल जाई ।

बाकिर, किताब के चउथा आवरण-पृष्ठ पर 'कवि-परिचय' हिन्दी में छपवावे में, पता ना, कवि के का मंशा बा– ऊहो 'पिता की साया छिन गयी', 'शैशवकाल का अबोधावस्था व्यतीत हुआ' जइसन हिन्दी में ! संगरह के शीर्षको 'चलले सुरुज छितिज के ओर' के जगहा 'चललऽ सुरुज छितिज कऽ ओर' छपल उचित नइखे बुझात । पुस्तक के प्रकाशक के रूप में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना के नाम दीहल गइल बा, जबकि ई सम्मेलन के प्रकाशन ना ह ।

कृति : 'चललऽ सुरुज छितिज कऽ ओर; कवि : बद्री नारायण तिवारी 'शाण्डिल्य'
प्रकाशक : धर्म भवन, 213, राजपूत नेवरी, बलिया (उ० प्र०)-277001
पृष्ठ : 32+8 = 40; पहिल संस्करण : 2002, मूल्य : 30 रु०/- ।

✪

निहोरा

भोजपुरी कविता के उत्कृष्ट, मानक, सांगोपांग समकालीन सरूप के प्रस्तुति 'कविता' के मंसा बा आ भरोसा बा सिरजनहारन के सर्जनात्मकता के । रउरा अनछपल प्रतिनिधि गीत, गजल, कविता आ लोकराग के रचनन के बेताबी से इंतजार रही 'कविता' के ।

www.bhojpurisahityangan.com

कविता–क्लब के स्थापना

भोजपुरी कविता खातिर रचनात्मक माहौल बनावे आ एकरा के आम लोगन से जोड़े के दिसाई पछिला चौबिस मई, २००२ के 'कविता' कार्यालय, श्याम भवन, एस० पी० सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड, पटना में कविता-क्लब के स्थापना-गोष्ठी सम्पन्न भइल, जवना के अध्यक्षता आचार्य पाण्डेय कपिल जी कइलीं आ कविवर सत्यनारायण जी खास मेहमान रहलीं । 'कविता' के सम्पादक जगन्नाथ जी कविता-क्लब के गठन के जरूरत पर रोशनी डालत कहलीं कि एह क्लब के तहत अलग-अलग जगह आ परिवेश में कविता के विभिन्न पक्ष पर बहस-मुबाहिसा, परिचर्चा, महत्वपूर्ण कवियन के एकल काव्य-पाठ आ अलग-अलग सुननिहारन के बीच कविता-गोष्ठी खुलिके अनौपचारिक ढंग से हर महीना होखल करी । मुख्य अतिथि सत्यनारायण जी कविता के मनुष्यता के मातृभाषा बतावत कहलीं कि कविता कबो मानव-विरोधी ना होले आ ऊ विध्वंस के ना, हरदम निरमान के भूमिका निबाहेले । अपना अध्यक्षीय भाषण में पाण्डेय कपिल जी के उद्‌बोधन रहे कि ई कवनो जरूरी नइखे कि कविता के एगो अच्छा शास्त्रीय जानकारी राखेवाला एगो बढ़िया कवि भी होखे । कथ, शिल्प आ संवेदना के कसौटी पर कसल रचना एगो उत्कृष्ट कविता होले । जगन्नाथ जी कविता-क्लब के अध्यक्ष के रूप में पाण्डेय कपिल के आ महामंत्री के रूप भगवती प्रसाद द्विवेदी के नाँव घोषित कइलीं, जवन सर्वसम्मति से स्वीकृत कइल गइल ।

क्लब के स्थापना का बाद पहिल कवि-गोष्ठी सम्पन्न भइल । महाराष्ट्र से आइल युवाकवि मनोज कुमार सिंह 'भावुक' के धारदार ताजा गजल, कथाकार-कवि सुरेश काँटक (काँट, ब्रह्मपुर) के जनचेतना जगावे वाली 'कविता', कवि-निबन्धकार कमला प्रसाद के हिन्दी के ओजस्वी आ चुनौती भरल रचना, कथाकार - कवि योगानन्द हीरा के मैथिली-हिन्दी के भावप्रवण गजल, कथाकार-गजलगो कृष्णानन्द कृष्ण के मन के अनुभूति के व्याख्यायित करत कविता 'मन', निबन्धकार नागेन्द्र प्रसाद सिंह के मउवत के ललकारे वाली गजल, कवि-समीक्षक सतीश प्रसाद सिन्हा के उद्‌बोधन गीत, कथाकार-कवि शिव दयाल के लीक से हटि के शहीद के शहादत के दरद के अभिव्यक्ति देत दिल के छुवेवाली हिन्दी रचना 'शहीद', कथाकार-कवि भगवती प्रसाद द्विवेदी के समय-संदर्भ से जुड़ल दोहा आ बाजारवाद पर गीत, गजलगो जगन्नाथ के 'तलाश' कविता आ संवेदना से भरल-पुरल गजल, मुख्य अतिथि सत्यनारायण के विविध रंग के दिल में उतरि जाएवाला भोजपुरी-हिन्दी के गीत आ अध्यक्ष पाण्डेय कपिल के अनुभव आ अनुभूति से लबरेज गजल खास तौर पर सराहल गइली स । सधल संचालन भगवती प्रसाद द्विवेदी कइले । आभार व्यक्त करत कविवर जगन्नाथ आपन एगो शेर विशेष रूप से उद्‌धृत कइलन–

साँस का गुनगुनाए के मन हो गइल
रउरा अइला से घर ई चमन हो गइल

✪

www.bhojpurisahityangan.com

पाठक के पन्ना

✪ 'कविता' अप्रैल अंक प्राप्त कइलीं !..... एह अंक के खास कवि श्री जयकान्त सिंह 'जय' के अभिव्यक्ति निश्चित रूप से सराहनीय बा । 'सुदर्शन उठावे के परी' युग-चेतना के आग में दहकत रचनाकार के सकर्मक चिन्तन के प्रतीक बा त 'विचारमंथन' मानसिक उद्वेग के उभारेवाला । चारो गजल समय, परिस्थिति, संबंध आ बदलत मूल्य के पर्त-दर-पर्त अनावरित करेवाला शक्तिबाण बा । 'हंस न सेइहें मानसरोवर / बकुला ठेकेदार बा, पंचे' अयोग्य का पदासीनता के प्रति क्षोभ के उजागर कर देता । 'जिए देत ना, मुए देत ना', 'खुलि के मन के बात कहो अब' अइसन पंक्ति आज के मानव के विवशता के व्यथा बा । 'हक के खातिर लड़े के सीखी' प्रेरक उद्बोधक गजल बा, जे भाषा, सरलता आ अभिव्यक्ति के सहजता के चलते लोगन के गुनगुनाये के बाध्य कर दी । शिवजी पाण्डेय आ सतीश प्रसाद सिन्हा के कविता प्रभावशाली बा ।

अक्षय कुमार के नवगीत नया बिम्बन के रचि के भोजपुरी के भाषिक सामर्थ्य के कवनो श्रेष्ठ भाषा के तुलना में खड़ा कर देले बा । 'अदमी बाजार हो रहल बाटे, चेतऽ', 'मौसम पाहुन बनि के सिटकिनी बजावे' मोहक भाव-योजना बा । बधाई स्वीकारीं अइसन रचना परोसे खातिर ।

पाण्डेय कपिल के दोहा का बारे में का कहीं । ओमें कबीर के टीस, युगझंकार आ बिहारी के गम्भीरता-प्रखरता के मणिकांचन योग बा..... ।

डॉ० (श्रीमती) शारदा पाण्डेय
142, बाघम्बरी गृहयोजना
भरद्वाजपुरम् प्रयाग-211006

✪ भोजपुरी कविता के मानक स्वरूप प्रस्तुत करे में आ हर छन्द के स्तरीय रचनन के परोसि के काव्यप्रेमियन के क्षुधा जुड़ावे में 'कविता' के कवनो जोड़ नइखे । नया-पुरान कवियन के एके संगे राखिके उचित मान दीहल एकर खासियत बा । 'पियवा', 'सइयाँ' के घिसल-पिटल 'लोक' से उबारि के सही माने में भोजपुरी कविता के प्रतिनिधि रचनन के परोसे खातिर 'कविता' के सम्पादकीय परिवार बधाई के पात्र बा ।

परशुराम तिवारी
दलछपरा, बलिया-277209

✪ भोजपुरी में काव्य विधा के एकलउती पत्रिका 'कविता' के रूप-रंग आ तुकान्त-अतुकान्त हर तरह के दमगर काव्य-प्रस्तुति देखि के सुखद अचरज भइल । हर अंक के 'खास कवि' के खस तरीका से पेश करेके अन्दाज आउर पत्रिकन से एकरा के अलगावत बा । भगवान करस, एकरा के हमरो उमिर लागि जाव ।

वीरेन्द्र सिंह
पीयूष शिक्षा केन्द्र, बलिया-277001

www.bhojpurisahityangan.com

सहयोगी रचनाकार

- **जितेन्द्र कुमार/9**
  मदनजी का हाता, पकड़ी चौक, आरा 802301
- **जीतेन्द्र वर्मा/10**
  वर्मा ट्रान्सपोर्ट, राजेन्द्र पथ, सीवान 841266
- **(मौलाना) डॉ. जौहर शफियाबादी/13**
  खानकाहे-आलिया-एमामिया, शफियाबाद शरीफ,
  जिला-गोपालगंज 841416 (बिहार)
- **पाण्डेय सुरेन्द्र/2**
  सी-2/एम-81, सेक्टर बी, सीतापुर रोड योजना, लखनऊ 226020
- **पी. चन्द्रविनोद/3**
  न्यू एफ/11, हैदराबाद कॉलोनी, बी.एच.यू. परिसर वाराणसी 221205
- **भगवती प्रसाद द्विवेदी/4, 22**
  पो॰ बॉ॰ 115, पटना 800001
- **मनोज कुमार सिंह 'भावुक'/8**
  पर्ल पालिमर्स लिमिटेड, बी-3/2 एम.आई.डी.सी. महाड
  जि॰-रायगढ़ (महाराष्ट्र) 402309
- **राजीव रंजन गिरि/10**
  108, मांडवी छात्रावास, जे. एन. यू., नई दिल्ली 110067
- **रामनिहाल 'गुंजन'/17**
  नया शीतलटोला, आरा-802301
- **रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'/7**
  शंकर भवन, सिविल लाइन्स, बक्सर
- **डॉ. शम्भुशरण/11**
  एन-14, प्रोफेसर्स कॉलोनी, चित्रगुप्तनगर, पटना 800020
- **डॉ. (श्रीमती) शारदा पाण्डेय/5**
  142, बाघम्बरी गृहयोजना, भरद्वाजपुरम्, प्रयाग 211006
- **सूर्यदेव पाठक 'पराग'/9**
  अध्यापक, उच्च विद्यालय मढ़ौरा, जिला-सारण 841418

'भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान', बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1 के ओर से स्वत्वाधिकारी जगन्नाथ द्वारा अनुकृति, बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1 से कम्पोज्ड आ न्यू प्रिन्टलाइन प्रेस, पटना-1 में मुद्रित । सम्पादक : जगन्नाथ